१—प्रमाणानि

प्रमाणम्

तत्रापि प्रथममुद्दिष्टस्य प्रमाणस्य तावल्लक्षणमुच्यते। प्रमाकरणं प्रमाणम्। अत्र च प्रमाणं लक्ष्यं, प्रमाकरणं लक्षणम्।

ननु प्रमायाः करणं चेत् प्रमाणं तर्हि तस्य फलं वक्तव्यम्, करणस्य फलवत्त्वनियमात्। सत्यम्। प्रमैव फलं, साध्यमित्यर्थः। यथा छिदाकरणस्य परशोश्छिदैव फलम्।

उद्देश अर्थात् नाममात्र से परिगणन कर दिया गया है। अब शेष ग्रन्थ में उनके लक्षण और परीक्षा करनी हैं उद्देश सूत्र में सबसे पहिले प्रमाण को रखा है अतएव उसी क्रम से सबसे पहिले प्रमाण का लक्षण करते हैं। यद्यपि न्यायसूत्रकार ने प्रमाण सामान्य का लक्षणसूचक कोई सूत्र नहीं लिखा है परन्तु उनके भाष्यकार वात्स्यायन ने—'प्रमाण शब्द का निर्वचन ही उसका लक्षण है अतएव सूत्रकार को उसका अलग लक्षण करने आवश्यकता नहीं है'। इस प्रकार का भाव व्यक्त करते हुए लिखा है—

'उपलब्धिसाधनानि प्रमाणानीति समाख्यानिर्वचनसामर्थ्याद्बोद्धव्यम्। प्रमीयते अनेन इति करणार्थाभिधानो हि प्रमाणशब्दः'[1]।

इसका अभिप्राय यह है कि प्र उपसर्ग पूर्वक मा धातु से करण में ल्युट् प्रत्यय करने से प्रमाण शब्द सिद्ध होता है अतएव प्रमा का करण अर्थात् साधन प्रमाण कहलाता है। यह प्रमाण का सामान्य लक्षण प्रमाण पद के निर्वचन से ही निकल आता है। अतएव उपलब्धि अर्थात् ज्ञान अथवा प्रमा के साधन अर्थात् करण को प्रमाण कहते हैं। यह प्रमाण का सामान्य लक्षण हुआ। इसी भाष्य के आधार पर तर्कभाषाकार प्रमाण लक्षण का सामान्य लक्षण करते हैं—

उन [षोडश पदार्थों] में भी प्रथम उद्दिष्ट [सबसे पहिले कहे हुए] प्रमाण का लक्षण सबसे पहिले कहते हैं। प्रमा का करण प्रमाण है। इस [लक्षण] में प्रमाण यह [पद] लक्ष्य [पद, अर्थात् जिसका लक्षण करना है वह] है और प्रमा का करण यह लक्षण [अंश] है।

[प्रश्न] अच्छा यदि प्रमा का करण [अर्थात् साधन] प्रमाण है तो उस [साधन रूप प्रमाण] का फल बतलाना चाहिये [क्योंकि] करण [अर्थात् साधन] का फल होना आवश्यक है।

---

१ न्याय भाष्य १, १, ३।

प्रमा

का पुनः प्रमा, यस्याः करणं प्रमाणम् ।

उच्यते । यथार्थानुभवः प्रमा । यथार्थ इत्ययथार्थानां संशय-विपर्यय-तर्कज्ञानानां निरासः । अनुभव इति स्मृतेर्निरासः ।

ज्ञातविषयं ज्ञानं स्मृतिः । अनुभवो नाम स्मृतिव्यतिरिक्तं ज्ञानम् ।

[उत्तर] ठीक है [अर्थात् करण का फल अवश्य होता है । इसलिये] प्रमा ही [प्रमाणरूप करण या साधन का] फल अर्थात् साध्य है । [जिसका साधन होता है वही उसका फल होता है प्रमा का करण या साधन प्रमाण है तो उसका फल प्रमा ही होगी] जैसे छेदन [काटने] के करण फरसे का फल छेदन ही होता है । [इसी प्रकार यहां प्रमा के करण अर्थात् प्रमाण का फल प्रमा ही समझना चाहिए]

इस प्रकार प्रमाण का सामान्य लक्षण हुआ । परन्तु इस लक्षण में प्रमा और करण दो शब्द आए जब तक उनकी व्याख्या न हो तब तक यह लक्षण स्पष्ट नहीं होता । अतएव आगे प्रमा का लक्षण करते हैं ।

[प्रश्न] फिर प्रमा क्या है जिसका करण प्रमाण [कहा जाता] है ।

[उत्तर] कहते हैं । यथार्थ अनुभव [का नाम] प्रमा है । यथार्थ पद से अयथार्थ [ज्ञान रूप] संशय, विपर्यय, और तर्क ज्ञान का निराकरण किया [जिससे संशय-विपर्यय और तर्क ज्ञान में प्रमा का लक्षण न चला जाय] । अनुभव इस [पद] से स्मृति का निराकरण किया [अर्थात् अनुभव पद इस लिए रखा कि स्मृति में प्रमा का लक्षण अतिव्याप्त न हो जाय] ।

[ज्ञान के दो भेद हैं एक अनुभव और दूसरा स्मृति । उनमें से] ज्ञात विषयक ज्ञान को स्मृति कहते हैं और स्मृति से भिन्न ज्ञान को अनुभव कहते हैं ।

पदकृत्य—

'प्रमाकरणं प्रमाणम्' यह प्रमाण का सामान्य लक्षण किया था । उसके स्पष्टीकरण के लिए 'प्रमा' का लक्षण करना आवश्यक है अतएव 'यथार्थानुभवः प्रमा' यह 'प्रमा' का लक्षण किया है । इस लक्षण में भी 'प्रमा' यह पद लक्ष्य अंश है और 'यथार्थानुभवः' इतना लक्षण अंश है । लक्षण अंश में यथार्थ और अनुभव इन दो पदों का समावेश है । लक्षण में ये दोनों पद विशेष अभिप्राय से रखे गए हैं । ऊपर अतिव्याप्ति आदि लक्षण के दोषों का वर्णन किया है । इन पदों के रखने का प्रयोजन अतिव्याप्ति दोष का निराकरण करना

Scanned with CamScanner

करणम्

किं पुनः करणम् ? साधकतमं करणम् । अतिशयितं साधकं साधकतमं प्रकृष्टं कारणमित्यर्थः ।

कारणम्

ननु साधकं कारणमिति पर्यायस्तदेव न ज्ञायते किन्तत्कारणमिति । उच्यते । यस्य कार्यात् पूर्वभावो नियतोऽनन्यथासिद्धश्च तत्कारणम् । यथा तन्तुवेमादिकं पटस्य कारणम् ।

हैं । और इस यथार्थ अनुभव के 'करण' को 'प्रमाण' कहते हैं । इस, यथार्थानुभवरूप प्रमा की उत्पत्ति ही प्रमाणरूप करण का साध्य या फल है । यह बात यहाँ तक कही । प्रमाण के 'प्रमा करणम् प्रमाणं' इस लक्षण में 'प्रमा' पद आया है उसकी व्याख्या यहाँ तक हो गई, अब लक्षण का दूसरा पद 'करण' रह जाता है । इसलिये आगे 'करण' और उसके प्रसङ्ग से 'कारण' की व्याख्या करते हैं ।

[प्रश्न] फिर करण किसको कहते हैं ?

[उत्तर] साधकतम को करण कहते हैं । अतिशयित साधक अर्थात् सर्वोत्कृष्ट कारण [साधकतम होने से करण कहलाता है ।]

[प्रश्न] साधक और कारण तो पर्याय वाचक हैं । यही नहीं मालूम है कि वह कारण क्या है । [अर्थात् कारण किसको कहते हैं यही जब तक न मालूम हो तब तक साधकतम अर्थात् प्रकृष्ट कारणरूप करण का ज्ञान नहीं हो सकता है । अतएव कारण का लक्षण बतलाने की आवश्यकता है ।]

[उत्तर] बताते हैं । जिसकी कार्य [अर्थात् उत्पन्न होने वाले घटादि पदार्थ] से पहिले सत्ता निश्चित हो और जो अन्यथासिद्ध न हो उसको कारण कहते हैं । जैसे तन्तु और वेमा [अर्थात् कपड़ा बुनने का साधनरूप दण्ड विशेष] आदि पट के कारण हैं ।

यह कारण का सामान्य लक्षण किया । इस कारण के लक्षण में 'नियतः' और 'अनन्यथासिद्धश्च' ये दो विशेषण पद विशेष महत्व के हैं । इनको इस लक्षण में रखने का क्या प्रयोजन है इसके जानने का प्रकार यह है कि उनमें से एक एक पद को हटा देने से क्या हानि होती है यह देखा जाय । इस प्रकार के विचार को 'पदकृत्य' कहते हैं । कारण के 'यस्य कार्यात् पूर्वभावो नियतः' इस लक्षण में यदि 'नियतः' पद न रखा जाय और 'यस्य कार्यात् पूर्वभावः'

Scanned with CamScanner